SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"शिक्षा की समस्याओं को दूर करने में क्रियात्मक अनुसंधान एक महत्वपूर्ण विधि"

निश्चल कुमार
शोधार्थी
एम.जे.पी.रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

डॉ. बी.आर.कुकरेती
शोध निर्देशक
एम.जे.पी.रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सारांश

क्रियात्मक अनुसंधान सम्बन्धी शोध कार्यो का आरंभ सर्वेप्रथम अमेरिका में कोलियर (Collier, 1933) के अध्ययनों से प्रारंभ हुआ। क्रियात्मक अनुसंधान के विकास में लेविन (Leevin, 1946), रोविन्सन (Robinson, 1948) और कोरे (Corey, 1953) आदि विद्धानों का योगदान महत्वपूर्ण है। क्रियात्मक अनुसंधान एक प्रकार की अनुसंधान नीति (Research Strategy) है, जिसका उपयोग सामाजिक समस्याओं, व्यावसायिक समस्याओं और विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना और इन समस्याओं का समाधान ढूंढना ही क्रियात्मक अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य है।

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ : अनुभव सिद्ध अनुसंधान के आधार पर क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है, जिसमें तात्कालिक समस्याओं का समाधान घटना स्थल पर ही करने पर बल दिया जाता है, जिससे कार्यो में सुधार लाया जा सकें। क्रियात्मक अनुसंधान के आधार पर अनुसंधानकर्ता तात्कालिक समस्याओं के सम्बन्ध में न केवल जानकारी प्राप्त करता है बलि इन समस्याओं का मूल्यांकन कर सुधार करने में समर्थ होता है। क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा नियम, सिद्धांतों का

न विकास किया जाता है और न प्रतिपादन बल्कि इसमें स्थानीय तात्कालिक समस्याओं का अध्ययन करके इसका समाधान व सुधार किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान के सम्पादन् संचालन और क्रियान्वयन पर सामाजिक अनुसंधानकर्ता का तो अधिकार क्षेत्र है ही वह इस अनुसंधान को सबसे अच्छे ढंग से पूर्ण कर सकता है। लेकिन इस प्रकार के अनुसंधानों को शिक्षक, प्राचार्य, प्रशासक, पर्यवेक्षक और समाज सुधारक भी कर सकते हैं। इस अनुसंधान के आधार पर वह स्थानीय तात्वकालिक समस्या के सम्बन्ध में अध्ययन कर नीतियों का निर्धारण व समस्याओं का सुधार कर सकते हैं। यह एक प्रकार का व्यावहारिक अनुसंधान है।

क्रियात्मक अनुसंधान की विशेषताएँ :

क्रियात्मक अनुसंधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है :–

1. **अनुभवसिद्ध अनुसंधान** –क्रियात्मक अनुसंधान अनुभवसिद्ध अनुसंधान पर आधारित एक प्रकार का अनुसंधान है। इस अनुसंधान में क्रियात्मक अनुसंधानकर्ता तात्कालिक समस्या का अध्ययन वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर करता है तथा अपने अनुसंधान में वैज्ञानिक सिद्धांतों के साथ–साथ अनुभव और तर्क के आधार पर भी समस्याओं का अध्ययन करता है।
2. **सम्बन्धित सामाजिक इकाई ही शोध का स्थान** – क्रियात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत अनुसंधान का स्थान समुदाय, संस्था संस्थान ही रहता है। इनकी समस्याओं के लिए ही क्रियात्मक अनुसंधान सम्पादित किये जाते हैं।
3. **व्यावहारिक अनुसंधान** – क्रियात्मक अनुसंधान को व्यावहारिक अनुसंधान इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि इस प्रकार के अनुसंधान में तात्कालिक समस्याओं का अध्ययन करके अध्ययन के आधार पर समस्याओं का समाधान किया जाता है या उनके सुधार के सम्बन्ध में नीतियों का निर्धारण किया जाता है।
4. **अनुसंधान से सम्बन्धित सदस्यों द्वारा शोध कार्य** – इस अनुसंधान में स्वयं सम्बन्धित संस्था के सदस्यों द्वारा अध्ययन किये जाते है तथा बाहर के व्यावसायिक अनुसंधान कर्त्ताओं की भूमिका नगण्य होती है।
5. **तात्कालिक समस्याओं का अध्ययन** – क्रियात्मक अनुसंधान में अनुसंधानकर्ता केवल यहाँ और अभी भी समस्याओं का अध्ययन करता है अर्थात् वह तात्कालिक समस्याओं का अध्ययन करता है। यह तात्कालिक समस्याएँ सम्पूर्ण समाज या समुदाय की न होकर

केवल स्थानीय प्रकार की होती है। क्रियात्मक अनुसंधान में इन समस्याओं के अलावा अन्य किसी प्रकार की समस्याओं का अध्ययन नहीं किया जाता है।

6. **स्थानीय परिवेश का अध्ययन** – क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा संस्था के स्थानीय परिवेश का ही अध्ययन सम्पादित किया जाता है। अन्य इकाईयों का अध्ययन इसके अन्तर्गत शामिल नहीं किया जाता।
7. **तात्कालिक समस्याओं का मूल्यांकन** – क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा तात्कालिक समस्याओं का मूल्यांकन किया जाता है अर्थात् इस अनुसंधान के द्वारा तात्कालिक समस्याओं के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी एकत्र की जाती है। जिससे समस्या के कारणों आदि की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकें। इस जानकारी के आधार पर ही तात्कालिक समस्या का मूल्यांकन क्रियात्मक अनुसंधानकर्ता करता है।
8. **तात्कालिक समस्याओं का समाधान** : क्रियात्मक अनुसंधान में अनुसंधानकर्ता का स्थानीय समस्याओं के अध्ययन का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना, उसके कारणों का पता लगाना ही नहीं होता है बल्कि अध्ययन के आधार पर समस्या के कारणों को कम या दूर करके समस्या समाधान में क्रियात्मक अनुसंधानकर्ता का दृष्टिकोण वैज्ञानिक ढंग से समस्या का समाधान करना होता है।
9. **तात्कालिक समस्याओं का सुधार** – तात्तकालिक समस्याओं के अध्ययन क्षेत्र में बहुत सी ऐसी समस्याएँ होती है जिनका समाधान तो नहीं किया जा सकता है, उनमें सुधार अवश्य किया जा सकता है।
10. **निष्पक्ष तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन पद्धति** – क्रियात्मक अनुसंधान प्रयत्न–भूल की प्रक्रिया पर आधारित न होकर पूर्वाग्रह रहित, निष्पक्ष तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन–पद्धति पर आधारित होता है।
11. **चक्रात्मक अध्ययन प्रक्रिया** – क्रियात्मक अनुसंधान प्रक्रिया प्रायः सतत्रूप से चलती रहती है तथा अध्ययन समस्या से सम्बन्धित निष्कर्षो का मूल्यांकन निरन्तर होता रहता है। यदि एक चरण में एक समस्या का समाधान खोज लिया जाता है तो अनुसंधान कार्य समाप्त न होकर दसूरे चरण में सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए अध्ययन की प्रक्रिया चलती रहती है। इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान में अनुसंधान – क्रिया–अनुसंधान–क्रिया अनुसंधान की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

12. **क्रियात्मक अनुसंधान दैनिक कार्यक्रम से सम्बन्धित –** इसके अन्तर्गत किसी विशेष इकाई के चयन तथा संगठन की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि संस्था, समुदाय तथा विभाग में दैनिक कार्यक्रम का ही प्रायः अध्ययन किया जाता है।
13. **जनतान्त्रिक भावना पर आधारित –** क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया सामूहिक क्रियाकलापों पर आधारित होने के कारण जनतान्त्रिक भावना के विकास के मार्ग को प्रशस्त करती है।
14. **रूढ़िवादिता में परिवर्तन –** क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा सामाजिक इकाई में प्रचलित अनुसंधान द्वारा सामाजिक इकाई में प्रचलित परिपाटियों में परिवर्तन करके सुधार लाने का प्रयास किया जाता है। दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में व्याप्त कुरीतियों, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास तथा परम्परावादी दृष्टिकोण आदि में परिवर्तन पर विशेष बल दिया जाता है।
15. **समस्या–प्रधान अनुसंधान –** क्रियात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत समस्याओं के अध्ययन तथा समाधान के उपायों की खोज की जाती है। सम्बन्धित समस्या का समाधान ही क्रियात्मक अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य होता हैं। इस प्रकार यह अनुसंधान समस्या अनुस्थापित अनुसंधान होता है।
16. **स्थानीय लोगों के अध्ययन तक सीमित –** क्रियात्मक अनुसंधान का सम्बन्ध केवल स्थानीय परिवेश तक सीमित होता है अथवा स्थानीय लोगों तक सीमित रहता है। इसमें एक स्थान विशेष के लोगों पर ही अध्ययन किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि क्रियात्मक अनुसंधान की समष्टि छोटी ही नहीं होती है बल्कि इसमें वह लोग आते है जो एक साथ काम करने वाले होते है, एक स्थान पर काम करने वाले होते है। क्रियात्मक अनुसंधान की समष्टि या जनसंख्या एक कक्षा, एक विद्यालय, एक मुहल्ला, एक कार्यालय आदि के लोगो तक ही होती है।
17. **व्यापक अध्ययन क्षेत्र :** क्रियात्मक अनुसंधान यद्यपि शिक्षाशास्त्रियों द्वारा विकसित किया गया अनुसंधान है लेकिन इसका उपयोग मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में भी बहुत अधिक हैं। वास्तव में देखा जाये तो कहा जा सकता है कि जहाँ–जहाँ मानव प्राणी है वहाँ स्थानीय स्तर पर तात्कालिक समस्याएँ अवश्य उत्पन्न होती रहती है। संक्षेप में जहाँ मनुष्य है, वहाँ तात्कालिक स्थानीय समस्याएँ है, वहाँ क्रियात्मक अनुसंधान का अध्ययन क्षेत्र हैं ।

क्रियात्मक अनुसंधान में निम्नांकित तथ्यों पर बल प्रदान किया जाता है –

1. विद्यालयी दिन–प्रतिदिन की समस्याओं का अध्ययन।
2. अध्यापक, प्रधानाचार्य, विद्यालयी प्रबन्धन तथा निरीक्षक द्वारा स्वयं अनुसंधानों में भागीदारी।

3. विद्यालयी क्रियाकलापों में सुधार तथा प्रगति।
4. सम्बन्धित शोधकर्ताओं द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाना तथा शैक्षणिक परिस्थितियों में अपनी रूचियों, पक्षपातों तथा पूर्वाग्रहों पर नियंत्रण।
5. विद्यालयी परिस्थितियों में प्रजातन्त्रात्मक मूल्यों को प्राथमिकता।
6. विद्यालयी कर्मचारियों में संवेदनशील का प्रस्फुटन, ताकि वे अपने कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत रहें।
7. वस्तुनिष्ठता के साथ शोधनकर्ताओं द्वारा अपने निर्णयों तथा कार्य में सुधार तथा संशोधन।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विद्यालयी क्रियाकलापों में सुधार तथा प्रगति लाने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान एक ज्वलंत अभियान है, ताकि प्रजातंत्र की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकें तथा देश सशक्त बन सकें।

सन्दर्भ

1. कपिल, एच०के० (2017), ''**अनुसंधान विधियाँ**'' एच०पी०, मार्गव हाउस, आगरा।
2. बी०बी० पाण्डेय (2018): ''**शिक्षा में क्रियात्मक शोध**'' तेतरा प्रकाशन, गोरखपुर।
3. श्रीवास्तव डी०एन० (2021): ''**अनुसंधान विधियाँ**'' साहित्य प्रकाशन, आगरा तृतीय संस्करण।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/21

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

निश्चल कुमार एवं डॉ. बी.आर.कुकरेती

For publication of research paper title

"बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com